प्यार में डूबा मेंढक

मैक्स

प्यार में डूबा मेंढक

मैक्स

मेंढक नदी के किनारे बैठा था. उसे आज कुछ अजीब सा लग रहा था.

उसे यह नहीं पता था कि वो खुश था या दुखी.
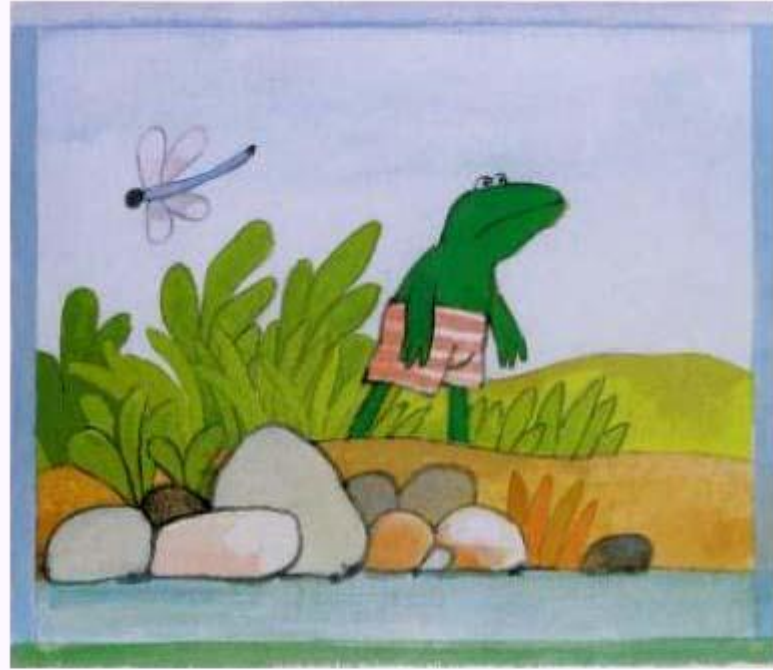
वो हफ्ते भर अपने सपनों में ही खोया-खोया घूम रहा था.

क्या वो बीमार था?

फिर उसकी मुलाकात छोटे सूअर से हुई.

"हेलो, मेंढक," छोटे सूअर ने कहा. "तुम्हारी तबियत बहुत अच्छी नहीं लगती है. तुम ठीक तो हो, न?"

"मुझे नहीं पता," मेंढक ने कहा. "मुझे एक ही समय पर हंसने और रोने का मन करता है. और मेरे अंदर कुछ धक-धक चल रहा होता है."

"हो सकता है कि तुम्हें सर्दी लग गई हो," छोटे सूअर ने कहा "बेहतर होगा कि तुम घर जाओ और बिस्तर पर आराम करो."

फिर मेंढक आगे चला. वो काफी चिंतित लग रहा था.

फिर वो खरगोश के घर के सामने से गुजरा.

"खरगोश," उसने कहा, "मुझे अच्छा नहीं लग रहा है."

"अंदर आओ और बैठो," खरगोश ने प्यार से कहा.

"अच्छा बताओ," खरगोश ने कहा, "तुम्हें क्या परेशानी है?"

"कभी-कभी मैं गर्म महसूस करता हूं, और कभी-कभी ठंडा," मेंढक ने कहा, "और यहां मेरे अंदर कुछ धक-धक हो रही है."

और फिर उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा.

खरगोश ने बहुत सोचा, बिलकुल एक असली डॉक्टर की तरह.

"देखो," उसने कहा. "वो तुम्हारा दिल है," उसने कहा. "मेरा दिल भी धक-धक करता है."

"लेकिन मेरा दिल कभी-कभी सामान्य से अधिक तेज़ी से धड़कता है," मेंढक ने कहा. "वो एक-दो, एक-दो, करता है."

खरगोश ने अपनी अल्मारी से एक बड़ी किताब निकाली और उसके पन्ने पलटे.

"अरे!" उसने कहा. "अगर दिल की धड़कन तेज़ हो और अगर तुम गर्म और ठंडा महसूस करते हो, इसका मतलब है कि तुम्हें किसी से प्रेम हो गया है!"

"प्रेम," मेंढक ने आश्चर्य से कहा.
"वाह! मुझे किसी से प्यार हो गया है!"

और फिर मेंढक इतना प्रसन्न हुआ कि वो दरवाजे से बाहर निकला और उसने हवा में एक जबरदस्त छलांग लगाई.

जब मेंढक अचानक आसमान से नीचे गिरा तो छोटे सूअर को काफी डर लगा.

"तुम पहले से बेहतर दिख रहे हो," छोटे सूअर ने कहा.

"मुझे ठीक-ठाक लग रहा है," मेंढक ने कहा "मुझे किसी से प्यार हो गया है!"

"यह तो बड़ी अच्छी खबर है. तुम किसके प्यार में पड़े हो?" छोटे सूअर ने पूछा.

मेंढक उसके बारे में सोचने के लिए नहीं रुका.

"मैं जानता हूँ!" उसने कहा. "मैं प्यारी सफेद बत्तख से प्रेम करता हूँ!”

"तुम ऐसा नहीं कर सकते," छोटे सूअर ने कहा. "एक मेंढक किसी बत्तख से प्यार नहीं कर सकता हैं. देखो, तुम्हारा रंग हरा है और बत्तख सफेद रंग की है."

लेकिन मेंढक उस बात को लेकर ख़ास परेशान नहीं लगा.

मेंढक लिख नहीं सकता था, लेकिन वो सुंदर पेंटिंग बना सकता था. घर पर वापस आकर मेंढक ने एक प्यारा सा चित्र बनाया, जिसमें उसने अपने पसंदीदा लाल और नीले रंगों का इस्तेमाल किया.

शाम को अंधेरा होने पर वो अपनी पेंटिंग लेकर बाहर निकला और उसने उसे बत्तख के घर के दरवाजे के नीचे धकेल दिया. मेंढक का दिल उत्साह से जोर-जोर से धड़क रहा था.

बत्तख वो पेंटिंग देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुई.

"मुझे यह खूबसूरत पेंटिंग भला कौन भेज सकता है?" वो चिल्लाई. फिर उसने वो पेंटिंग दीवार पर लटका दी.

अगले दिन मेंढक ने फूलों का एक सुंदर गुलदस्ता बनाया.

वो गुलदस्ते को देने के लिए बत्तख के घर गया.

लेकिन जब वो बत्तख के दरवाजे पर पहुंचा, तो उसे बत्तख का सामना करने में बहुत शर्म महसूस हुई. इसलिए उसने फूलों को दरवाजे पर ही रख दिया और जितनी तेजी से हो सका वो वहां से भाग गया.

और फिर यही सिलसिला दिन-ब-दिन चलता रहा.

मेंढक, बत्तख से बोलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहा था.

बत्तख को जो उपहार मिले थे वो उनसे बहुत प्रसन्न थी. लेकिन वो उपहार उसे कौन भेज रहा था?

बेचारा मेंढक! अब उसे अपना भोजन बेस्वाद लग रहा था, और वो रात को सो भी नहीं पा रहा था. हफ्तों तक ऐसा ही चलता रहा.

वो बत्तख को अपना प्रेम कैसे दिखाए?

"मुझे कुछ ऐसा करना चाहिए जो पहले किसी और ने न किया हो," मेंढक ने फैसला किया.

"मैं दुनिया की उच्च कूद का रिकॉर्ड तोडूंगा! उससे प्रिय बतख बहुत आश्चर्यचकित होगी, और फिर वो मुझे वापस प्यार करने लगेगी."

मेंढक ने तुरंत उच्च कूद का अभ्यास करना शुरू कर दिया. उसने कई दिनों तक ऊंची कूद का अभ्यास किया. वो बादलों की ऊंचाई तक कूदा. दुनिया में किसी भी मेंढक ने इससे पहले कभी इतनी ऊंची छलांग नहीं लगाई थी.

"मेंढक को क्या हो गया है?" बत्तख ने चिंतित होकर पूछा. "इस तरह कूदना बहुत खतरनाक है. इससे उसे चोट लग सकती है."

बत्तख की बात सही निकली. शुक्रवार दोपहर दो बजकर तेरह मिनट पर एक बड़ी दुर्घटना हुई.

मेंढक इतिहास की सबसे ऊंची छलांग लगा रहा था तभी वो अपना संतुलन खो बैठा और धड़ाम से जमीन पर चित्त गिर पड़ा. इत्तिफाक से बत्तख उसी समय वहां से गुजर रही थी. बत्तख उस की मदद के लिए तेजी से दौड़ी.

मेंढक बड़ी मुश्किल से ही चल पाया. बत्तख उसे सहारा देते हुए अपने साथ घर ले गई. घर पर बत्तख ने बहुत प्यार से मेंढक की देखभाल की और उसे अच्छा खाना खिलाया.

"अरे मेंढक, शायद आज तुम मर जाते!" बत्तख ने कहा. आगे से तुम सावधान रहना. मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ!"

फिर अंत में मेंढक भी अपनी हिम्मत जुटा पाया.

"मैं भी तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, प्रिय बत्तख," मेंढक ने हकलाते हुए कहा. अब उसका दिल पहले से कहीं ज्यादा तेजी से धड़क रहा था और उसका चेहरा गहरा हरा हो गया था.

तब से मेंढक और बत्तख, दोनों एक-दूसरे से बेहद प्यार करते हैं.

पर मेंढक हरा है और बतख एकदम सफेद है.

पर प्यार इस तरह की सीमाओं और बंधनों से परे होता है.

समाप्त